कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) ----------

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में ----------

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी [ ] अंग्रेजी [✓]

विषय संस्कृत

परीक्षा का दिन सोमवार

दिनांक 18-3-19

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है।164/2018

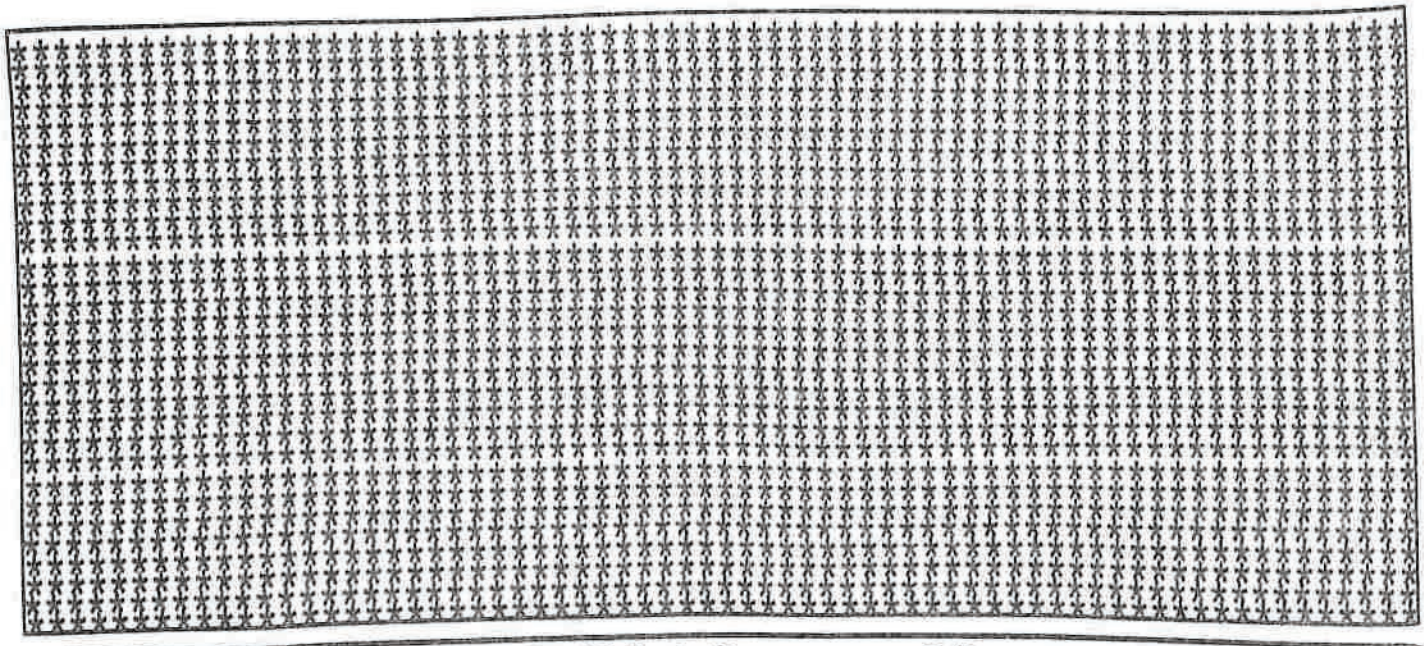

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंसा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

1) मातृदेवो ---------- एवमुपासितव्यम्।

प्रसंग :-

प्रस्तुत गद्यांश हमारी संस्कृत की पाठ्यपुस्तक 'स्पन्दना' के 'आचार्योपदेशः' शीर्षक पाठ से उद्धृत है। इसमें विद्या के पूर्ण होने के बाद दीक्षान्त संस्कार के दौरान गुरु के द्वारा शिष्य को दी गई शिक्षा का वर्णन है।

अनुवाद :-

गुरु शिष्य को उपदेश देते हुए कहता है कि माता देवता तुल्य होती है। पिता देवता तुल्य होते हैं। आचार्य देवता तुल्य होते हैं और अतिथि भी देवता तुल्य होते हैं। अर्थात् इनको देवता के समान मानकर इनकी सेवा करनी चाहिए। जो प्रशंसनीय कर्म हैं उन्हीं का सेवन करना चाहिए अन्य निन्दनीय कर्मों की नहीं। जो हमारे अच्छे चरित्र हैं उन्हीं की उपासना करनी चाहिए अन्यों की नहीं। अर्थात् श्रेष्ठ आचरणों को अपनाना चाहिए। श्रद्धापूर्वक दान देना चाहिए। अश्रद्धा से नहीं देना चाहिए। ऐश्वर्य के अनुसार देना चाहिए। लज्जा-पूर्वक देना चाहिए। पारलौकिक भय से देना चाहिए। मित्रादि कार्य मानकर देना चाहिए। यही आदेश है। यही उपदेश है। यही वेदों और उपनिषदों का सार है। यही अनुशासन है। अतः इसी की उपासना की जानी चाहिए।

2) परीक्षे ---------- पयोमुखम्॥

प्रसंग :-

प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्पन्दना' के 'सुभाषितरत्नानि' शीर्षक पाठ से उद्धृत है। इसमें 'कैसे मित्र को त्याग देना चाहिए' - इसका वर्णन किया गया है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

अनुवाद -

कवि कहता है कि जो पीठ पीछे काम बिगाड़ने वाला हो तथा सामने मधुर बोलने वाला हो, ऐसे मित्र को जिसके मुख भाग पर दूध लगा हो ऐसे विष से भरे घड़े के समान मानकर त्याग देना चाहिए। अर्थात् ऐसे अहितकारी मित्र को छोड़ देना चाहिए।

त्वमसि - - - - - - - - - - - - - - - - - - - रुचिराभरणा॥

3.> प्रसंगः-

प्रस्तुतपद्यम् अस्माकं पाठ्यपुस्तकस्य 'स्पन्दना' इत्यस्य 'जय सुरभारति!' इति शीर्षकपाठात् उद्धृतम्। मूलतः इदं पद्यः कविपुंगवेन डॉ. हरिराम आचार्येण विरचितायाः सरस्वती वन्दनायाः संकलितः। अस्मिन् पद्ये कविः ~~स्र~~ सरस्वतीवन्दनां कुर्वन् कथयति यत् -

व्याख्याः -

हे देवि सरस्वति! भवती सर्वलोकानां शरणदात्री आश्रयभूता वा, त्रिषु लोकेषु धन्या श्रेष्ठा वा अस्ति। त्वं देवैः ऋषिभिः च सम्पूजितपादयुक्ता चास्ति। भवती नवकाव्यरसैः माधुर्यदायिनी कविता द्वारा शब्दायमाना चास्ति। भवती मन्दहँसीयुक्ता छवियुक्ता सुन्दराभूषणायुक्ता च अस्ति।

विशेषः-

1.> अत्र कविना विविधविशेषणैः सरस्वत्याः स्तुतिः कृता।

2.> पद्यस्य भाषा सरला सरसा चास्ति।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

प्रतापः- ------------------------ भविष्यति।

4.> प्रसंग :-

प्रस्तुतनाट्यांशः अस्माकं पाठ्यपुस्तकस्य 'स्पन्दना' इत्यस्य 'स्वदेशं कथं रक्षेयम्' इति शीर्षकपाठाद् उद्धृतः मूलतः पाठोऽयं डॉ नारायणशास्त्री कांकरेण विरचिता एकांकी वर्तते। अंशेऽस्मिन् महाराणाप्रतापस्य साधनाभावे दयनीयदशायाः तस्य स्वराष्ट्र प्रति स्नेहस्य वर्णनम् अस्ति

व्याख्या :-

प्रतापः- अरे। माम् धिक् अस्ति। चेद् अहं स्वराष्ट्रं रक्षणाय न समर्थोऽस्मि, तदा मम अत्र निवासेन कोऽपि प्रयोजनं नास्ति। (दीर्घं निःश्वासं त्यजति)

(तदनन्तरं कोऽपि राजपुत्रः वीरः प्रवेशं करोति।)

सर्वदारः - (नृपोचितं प्रणामं कृत्वा) महाराणाप्रतापस्य विजयं भवतु, विजयं भवतु।

प्रतापः - (दीर्घं निःश्वासं त्यक्त्वा मुखम् उत्थाप्य च) हा धिक्। भ्रातः। भवतः अपि विजयवचनैः इत्थं मां लज्जायुक्तं करोति।

सर्वदारः - हे प्राणाधार। भवान् एतत् किं कथयति? भवान् स्वस्य कर्तव्यपालनाय सर्वं किमपि कृतम्। स्वराष्ट्रस्य स्वाधीनतायै बहूनि कष्टानि भवता सहनं कृतवन्तः। अतः भवतः सदैव विजयः एव भवितुं शक्नोति।

विशेष :-

1.> अत्र प्रतापस्य साधनाभावे खिन्नस्थित्याः वर्णनम् कृतम्।

2.> पद्यांशस्य नाट्यांशस्य भाषा सरला सरसा प्रेरणास्पदा चास्ति।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

5.) (i.) सर्वदमनस्य मणिबन्धे रक्षाकरण्डकम् आबद्धम् आसीत्।
(ii.) कस्तूरी मृगात् जायते।
(iv.) पञ्चतन्त्रस्य रचना पं. विष्णुशर्मा महोदयेन कृता।
(v.) यानि अनवद्यानि कर्माणि तानि अस्माभिः सेवितव्यानि।
आगे (vii.) 'संघेशक्तिः' इति पाठस्य कथा हितोपदेशस्य 'मित्रलाभ' इति परिच्छेदात् सम्पादिता विद्यते।
(viii.) काव्येषु नाटकं रम्यम् उच्यते।

6.) ततस्तं कः भूत्वा दशति ?

7.) भवान् किं वदति ?

8.) कस्य सदा विजय एव भविष्यति ?

9.) मेघान् कुत्र अवलोक्य नन्दामि ?

10.) 1.) प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः।
तस्मात्तदेव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता॥
2.) जय जय हे भगवति सुरभारति! तव चरणौ प्रणमामः।
नाद-ब्रह्ममयि जय वागीश्वरि! शरणं ते गच्छामः॥

11.) (क.) परोपकारस्य महत्त्वं
(ख.) i.) सर्वे स्वार्थं समीहन्ते।
ii.) गावः अन्येभ्यः दुग्धं प्रयच्छन्ति।
iii.) इ नदी स्वजलं स्वयं न पिबति।
iv.) स्वार्थं विहाय अन्येभ्यः जीवनमेव वरं विद्यते।
v.) परेषाम् उपकारः परोपकारः उच्यते।
(ग) i.) 'वृक्षाः फलानि प्रयच्छन्ति'। अत्र कर्तृपदं

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

'वृक्षाः' इति अस्ति।

ii.) 'स्वार्थाय सर्वेऽपि जीवन्ति' अत्र सर्वनामपदं 'सर्वे' इति अस्ति।

iii.) "मातृसमा उपकारिणी का विद्यते?" अत्र विशेषणपदं 'मातृसमा' इति अस्ति।

iv.) "अतः स्वार्थं विहाय अन्येभ्यः जीवनमेव वरम्।" अत्र विशेष्यपदं 'जीवनम्' इति अस्ति।

12.) i.) महर्षिः - महा + ऋषिः (गुण सन्धि)
ii.) शिवोऽहम् - शिवः + अहम् (उत्व विसर्ग सन्धि)

13.) i.) गै + अकः - गायकः (अयादि सन्धि)
ii.) शिवस् + च - शिवश्च (श्चुत्व व्यंजन सन्धि)

14.) i.) विशालभवनं - विशालं च तद् भवनम् (कर्मधारय समास)
ii.) भरतशत्रुघ्नौ - भरतः च शत्रुघ्नः च (द्वन्द्व समास)
iii.) दिनं दिनं प्रति - प्रतिदिनम् (अव्ययीभाव समास)

15.) (i.) 'विना' पदस्य योगे द्वितीया विभक्तिः।
(ii.) 'नम्' धातुयोगे चतुर्थी विभक्तिः।
(iii.) 'उपर्युपरि' पदस्य योगे द्वितीया विभक्तिः।

16.) (i.) श्रीधरः धनी आसीत्।
(ii.) शिक्षिका बालाः पाठं पाठयति।

17.) i.) बुद्धिमती = बुद्धि + मतुप् प्रत्यय
ii.) पार्वती = पर्वत + ङीप् प्रत्यय

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

18) (i) अहं श्वः देहलीं गमिष्यामि।
(ii) तृणानि इतस्ततः विकीर्णानि आसन्।
(iii) वयम् अधुनैव कार्यं सम्पादयामः।

19) जनेन ग्रामः गम्यते।

20) भगिनी वस्त्रं प्रक्षालयति।

21) अहं नगरं गच्छामि।

22) महेशः रात्रौ सपाददशवादने शयनं करोति।
(i) 'शताब्दी' रेलयानं ~~पादोनदशवादने~~ पादोनदशवादने
(ii) जयपुरात् देहलीं गच्छति।

23) कृषकः प्रातः क्षेत्रं प्रतिगच्छति।
i) हट्टे तिस्रः महिलाः वस्तूनि क्रीणन्ति।
ii) अहं रोटिकां खादामि।
iii)

25) महेशः - निरञ्जन! श्वः रविवासरः, तव का योजना वर्तते?
निरञ्जनः - अरे त्वं न जानासि? रविवासरे सर्वे मिलित्वा वसतेः स्वच्छता करणीयास्ति।
महेशः - अहो! उत्तमः विचारः। सर्वैः श्वः कदा गम्यते?
निरञ्जनः - प्रातः अष्टवादनात् आरभ्य कार्यमिदं भविष्यति।
महेशः - पूर्वं कस्य भागस्य स्वच्छता करिष्यते?
निरञ्जनः - नालीनां विद्यमानस्य अधस्य उद्यानस्य आदौ करिष्यामः।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

महेशः – तेन तद् रमणीयं सुन्दरं च भविष्यति।
निरञ्जनः – वामतः स्वच्छता योजनायाँ स्वीकृता एव।

26.) (i.) महिला कूपात् जलम् आनयति।
(ii.) त्वम् अपि गच्छ।
(iii.) अहं गणितं विज्ञानं च ~~पठति~~ पठामि।
(iv.) मित्राय दुग्धं रोचते।
(v.)

27.) (i.) पर्वतस्य पृष्ठतः ग्रामः अस्ति।
(ii.) ग्रामे सुन्दराणि उपवनानि सन्ति।
(iii.) मध्ये च भगवतः शिवस्य देवालयोऽस्ति।
(iv.) पर्वतं निकषा एका नदी प्रवहति।
(v.) ग्रामजनाः नद्यां तरन्ति।
(vi.) ग्रामस्य विद्यालयः अतीव मनोहरः अस्ति।

28.) (i.) एकदा एकः मकरः नद्यां वसति स्म।
(ii.) नद्याः तटे फलोपेतः जम्बूवृक्षः आसीत्।
(iii.) तस्य शाखायां बानरः वसति स्म।
(iv.) मकरः वानरेण पतितानि मधुरफलानि आस्वाद्य अचिन्तयत्
(v.) 'फलानि अतिमधुराणि' अतः वानरः हृदयन्तु अतीव मधुरं स्यात् अतः वानर हृदयं खादामि।
(vi.) वानरः मकरस्य प्रयासं बुद्धि चातुर्येण विफलीकृतवान्।

5.) (vi.) सर्वे प्राणिनः प्रियवाक्यप्रदानेन (मधुरभाषणेन) तुष्यन्ति।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

24)

सुनगरम्
18 मार्च 2019

प्रियमित्र! कवीन्द्र!

कुशली सन् कुशलं कामये। मा. शि. बोर्ड परीक्षा सन्निकटे वर्तते। अहं समयसारिणीं निर्माय योजनया अधीयनः अस्मि। अधुना मम परिजनाः अपि मम सहयोगे रताः सन्ति। गुरवः सर्वोत्तमान् अङ्कान् प्राप्तुं विद्यालये विशेषकक्षां सञ्चालयन्ति। ममापि लक्ष्यं तदेव वर्तते। भवानपि योजनया एव अधीयानः स्याद्। गतः कालः न पुनरायाति, इति सूक्तिं सर्वदा अपि स्मर।

भवन्मित्रम्
नरेन्द्रः

समाप्त॥